Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 1

ईंटें, मनकें तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

भाग - 5

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

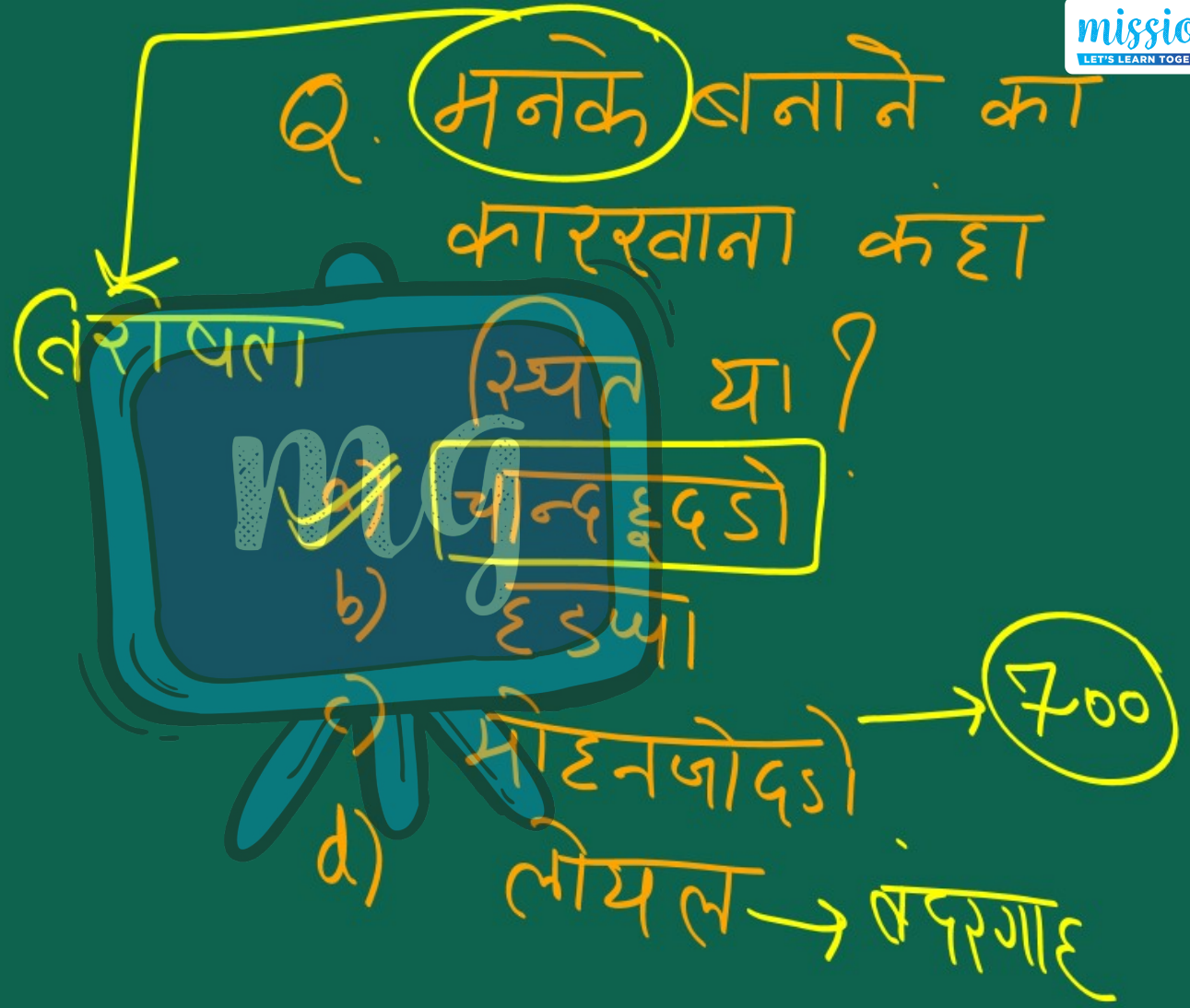

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

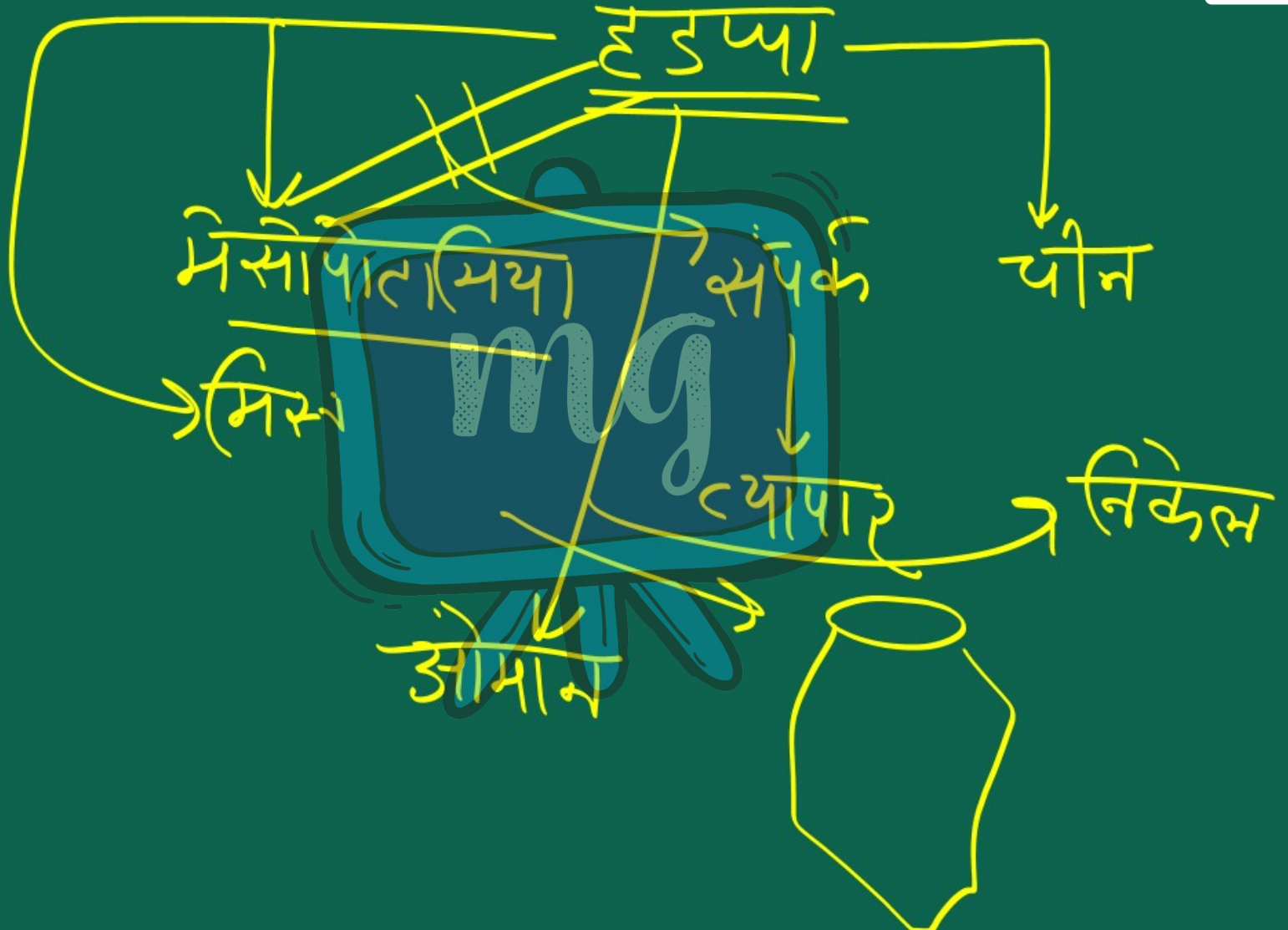

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सुदूर क्षेत्रों से संपर्क

95% ≠ 100%

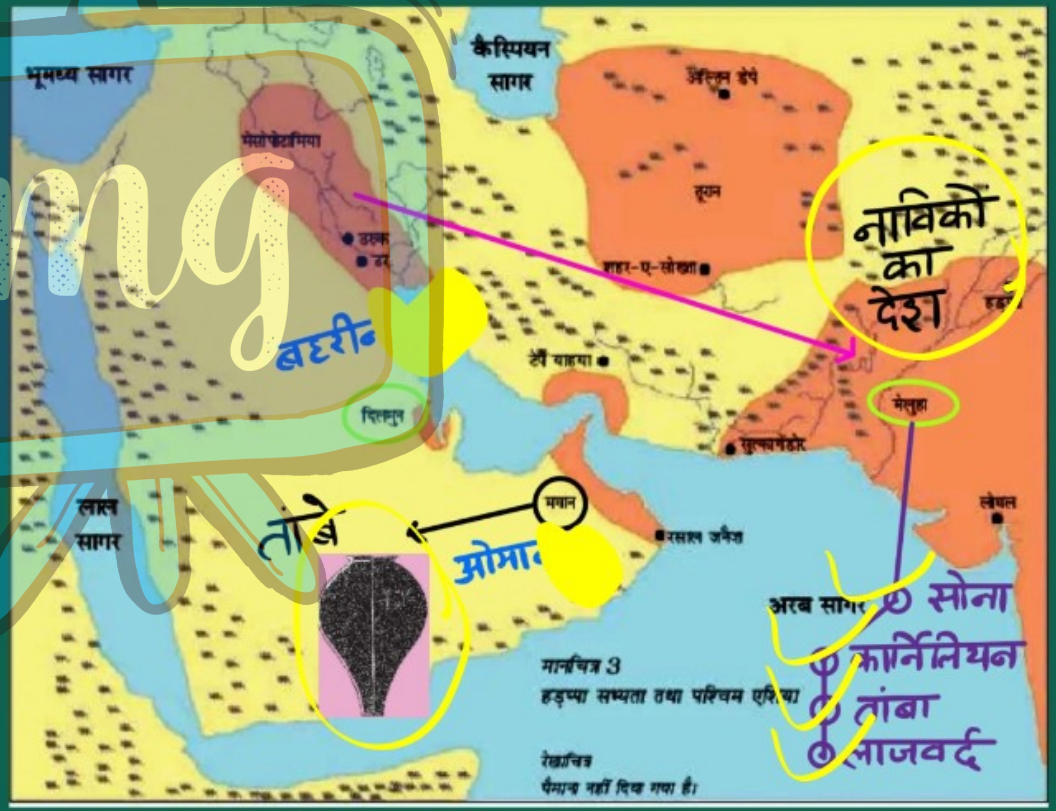

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

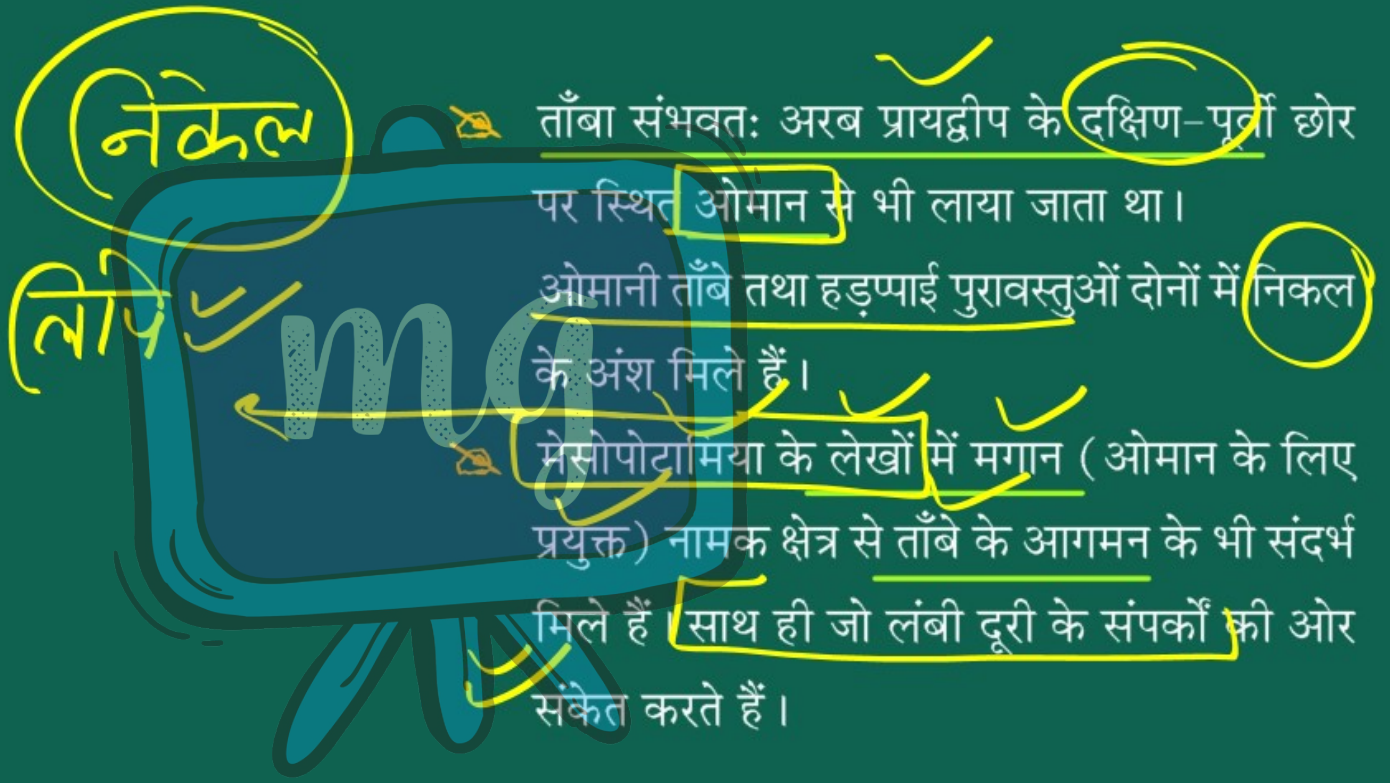

- ताँबा संभवतः अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी छोर पर स्थित ओमान से भी लाया जाता था।
- ओमानी ताँबे तथा हड़प्पाई पुरावस्तुओं दोनों में निकल के अंश मिले हैं।
- मेसोपोटामिया के लेखों में मगान (ओमान के लिए प्रयुक्त) नामक क्षेत्र से ताँबे के आगमन के भी संदर्भ मिले हैं। साथ ही जो लंबी दूरी के संपर्कों की ओर संकेत करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मेसोपोटामिया के लेखों से दिलमुन (बहरीन द्वीप), मगान (ओमान), मेलुहा (हड़प्पाई क्षेत्र) से संपर्कों की जानकारी मिली है तथा इन लेखों में मेलुहा से कार्नीलियन, लाजवर्द मणि, ताँबा, सोना तथा विशिष्ट प्रकार की लकड़ी प्राप्त करने के भी उल्लेख हैं।
- एक विशिष्ट प्रकार का पात्र (हड़प्पाई मर्तबान) जिसके ऊपर काली मिटटी की परत चढ़ाई जाती थी। ओमानी स्थलों से मिला है। यह काली मिट्टी तरल पदार्थ के रिसाव को रोकती है। संभवत: हड़प्पाई लोग इसमें रखे सामान के बदले में ओमानी ताँबा लेते थे।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मेसोपोटामिया से मेलुहा लोगों का संपर्क सामुद्रिक मार्ग से था, इसलिए वो मेलुहा को नाविकों का देश कहते थे। मोहर पर नाव का चिह्न यही दर्शाता है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. हम कैसे कह सकते हैं
को हड़प्पाई लोगो के
सुदूर क्षेत्र मे संपर्क थे?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संपर्क

प्रेषक की पहचान

अनपढ



धार्मिक प्रतीक

पैड - पाड़ तो नहीं की

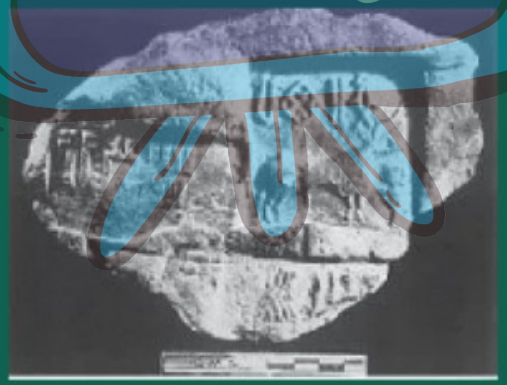

रोपड से मिला एक मुद्रांकन

मुहरें :-

- मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लम्बी दूरी के संपर्कों को आसान बनाता था।
- सामान भरे थैले के मुख को रस्सी से बांधकर उसकी गाँठ पर गीली मिट्टी जमा करके मुहरों से दबा कर छाप डाल दी जाती थी।
- गंतव्य स्थान तक छाप वैसी ही अक्षुण्ण रहे तो किसी प्रकार की छेड़-छाड़ नहीं हुई है।
- मुद्रांकन से प्रेषक की पहचान हो जाती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

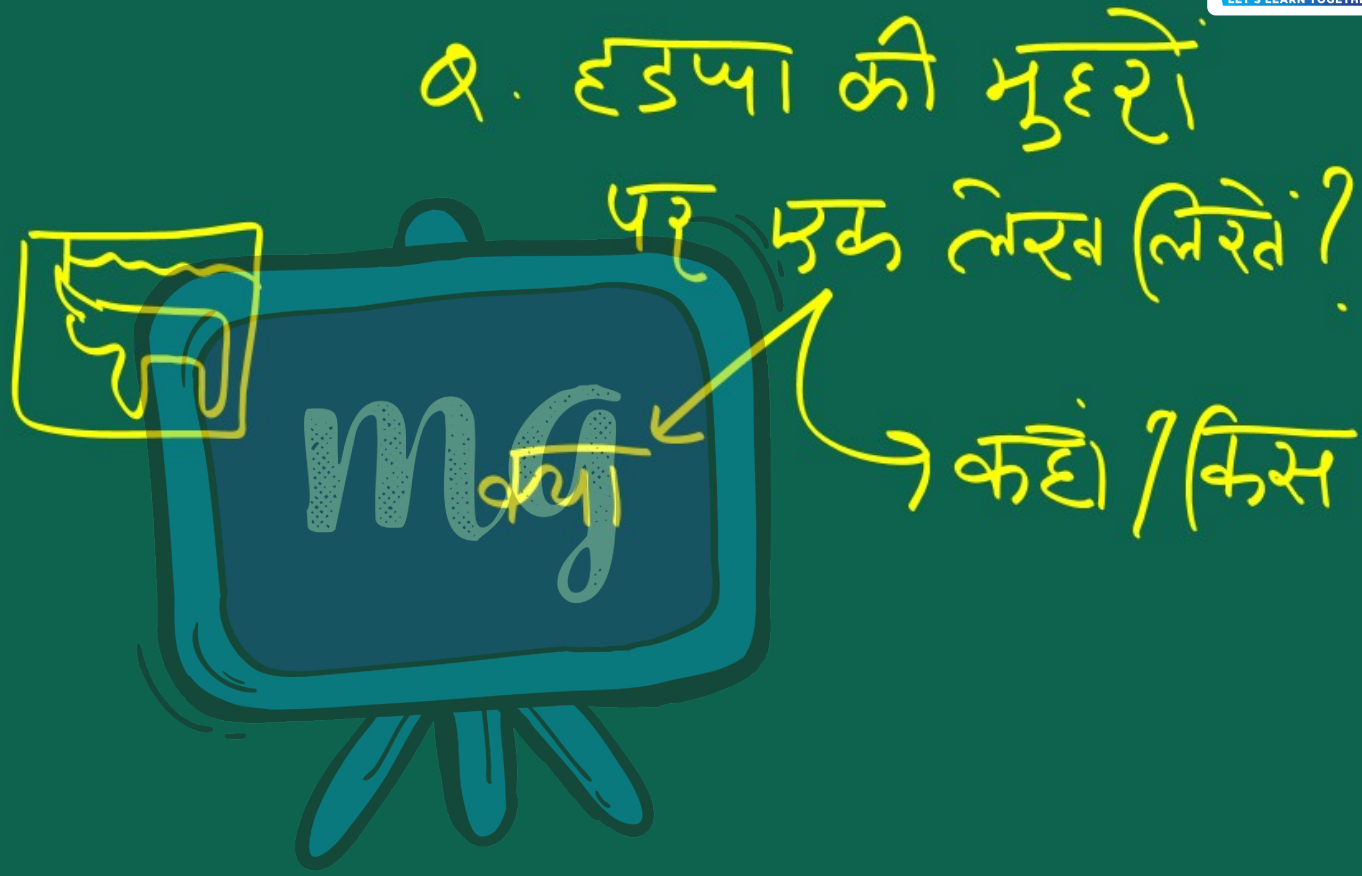

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

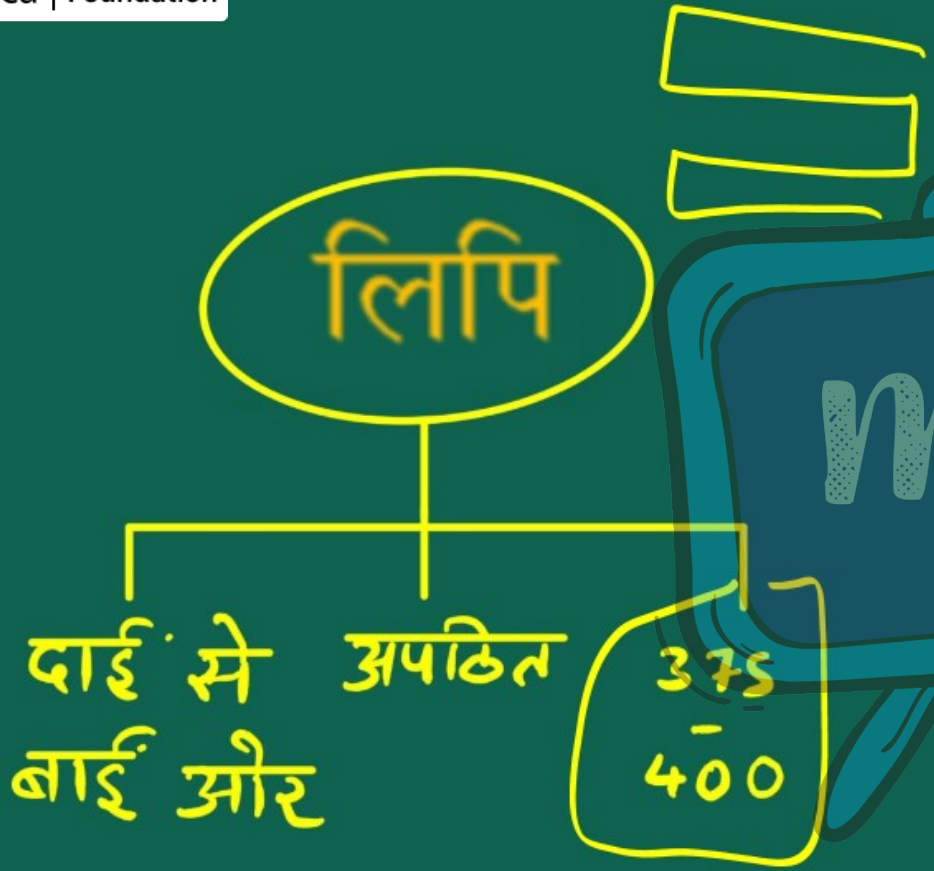

लिपि (रहस्यमय) :-



एक प्राचीन सूचनापट्ट

- हड़प्पाई मुहरों में एक पंक्ति में लिखा हुआ संभवत: मालिक के नाम व पदवी को दर्शाता है।
- इस पर बना चित्र (आमतौर पर जानवर का) अनपढ़ लोगों को सांकेतिक रूप से इसका अर्थ बताता था।
- अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त है : सबसे लंबे अभिलेख में 26 चिन्ह हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

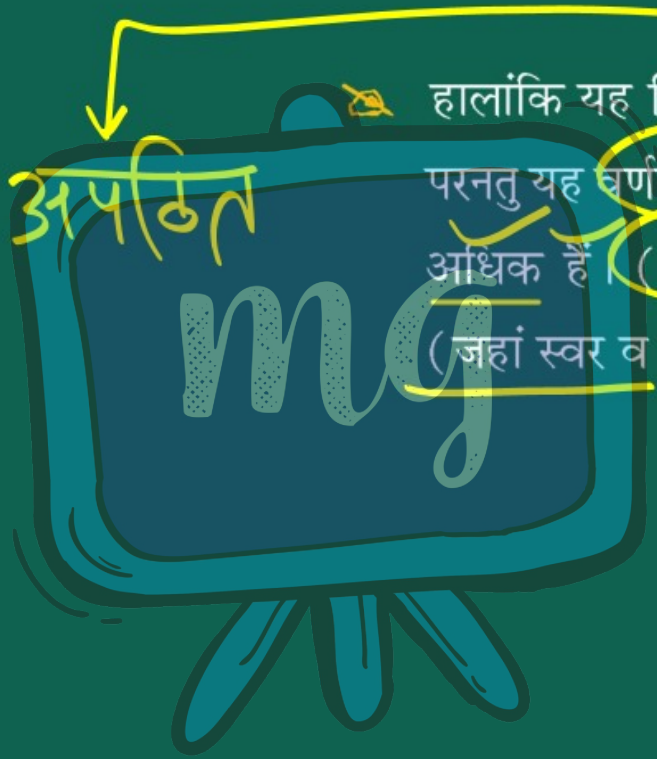

- हालांकि यह लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है परनतु यह वर्णमालीय नहीं लगती क्योंकि इसमें चिन्ह अधिक हैं। (375 से 400 के बीच) वर्णमालीय (जहां स्वर व व्यंजन के चिन्ह होते हैं)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

17

धौलावीरा

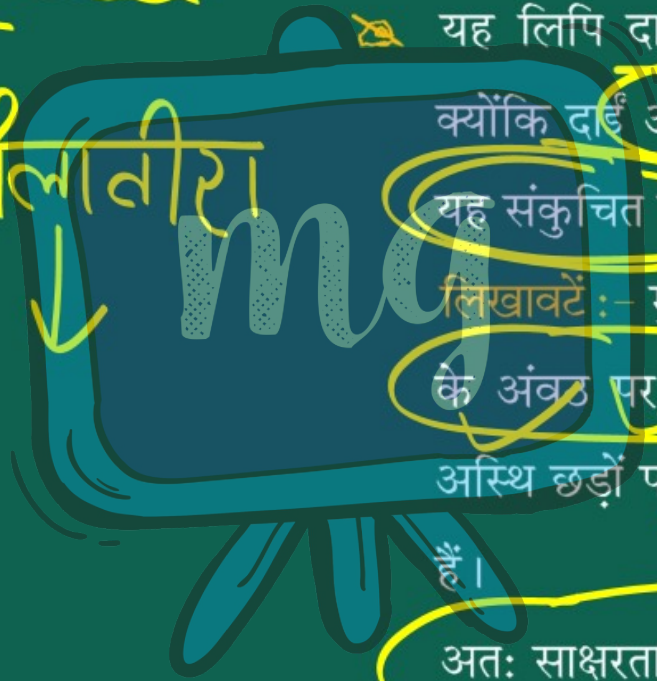

यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती होगी क्योंकि दाईं ओर चौड़ा अंतराल है तथा बाईं ओर यह संकुचित है।

लिखावटें :- मुहरों पर, ताँबे के औजारों पर, मर्तबानों के अंवठ पर, तांबे व मिट्टी की आभूषणों तथा अस्थि छड़ों पर, एक प्राचीन सूचना पट्टे पर मिली हैं।

अतः साक्षरता व्यापक थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

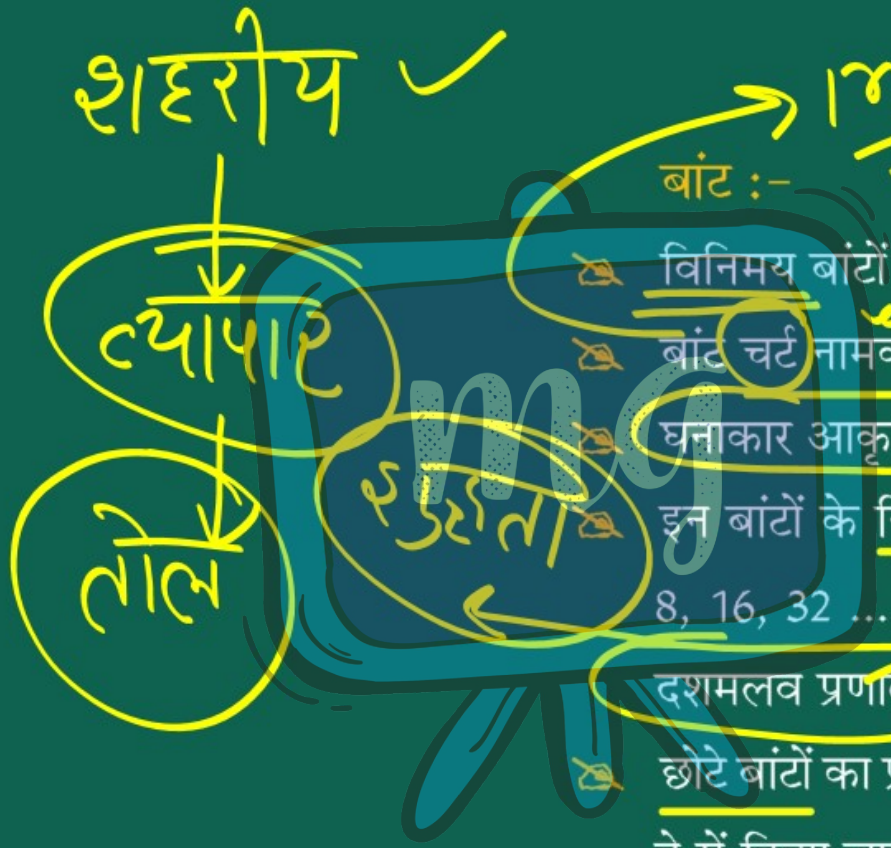

बांट :-

- विनिमय बांटों की परिशुद्ध प्रणाली से नियंत्रित थे।
- बांट चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे।
- घनाकार आकृति के होते थे।
- इन बांटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 ... इत्यादि) थे जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।
- छोटे बांटों का प्रयोग आभूषणों तथा मनकों को तौलने ने में किया जाता होगा।
- धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

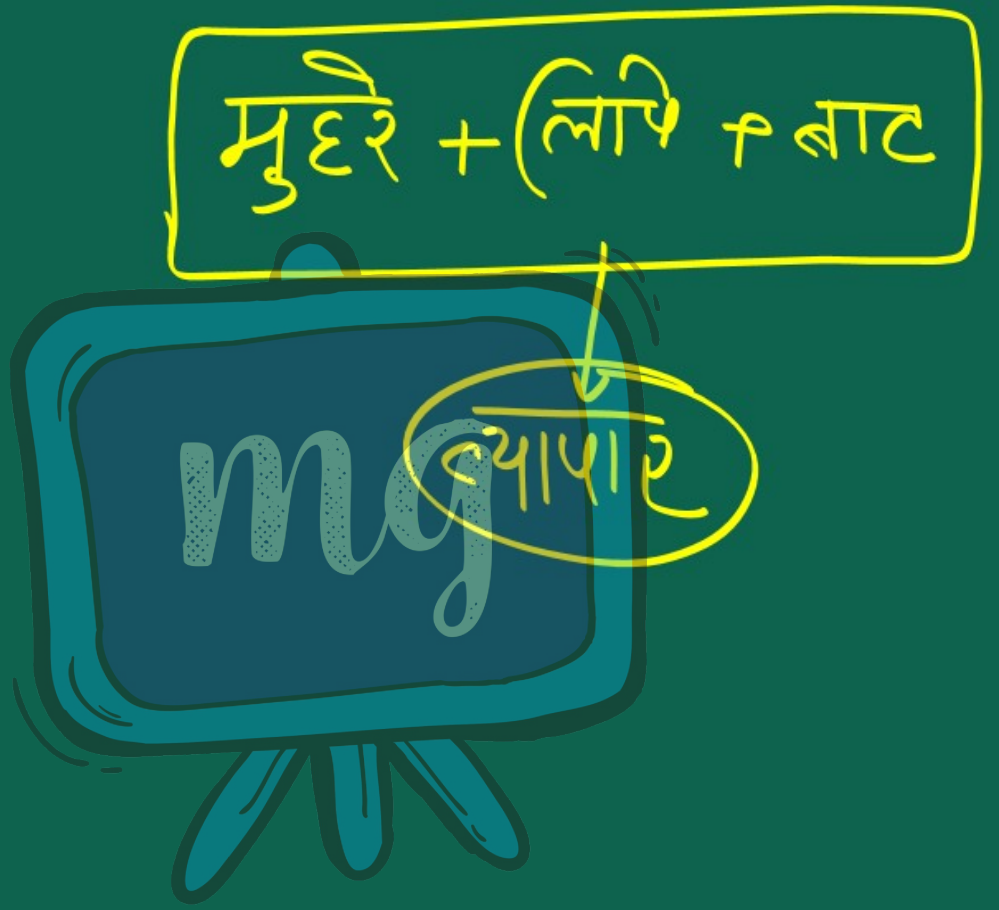

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

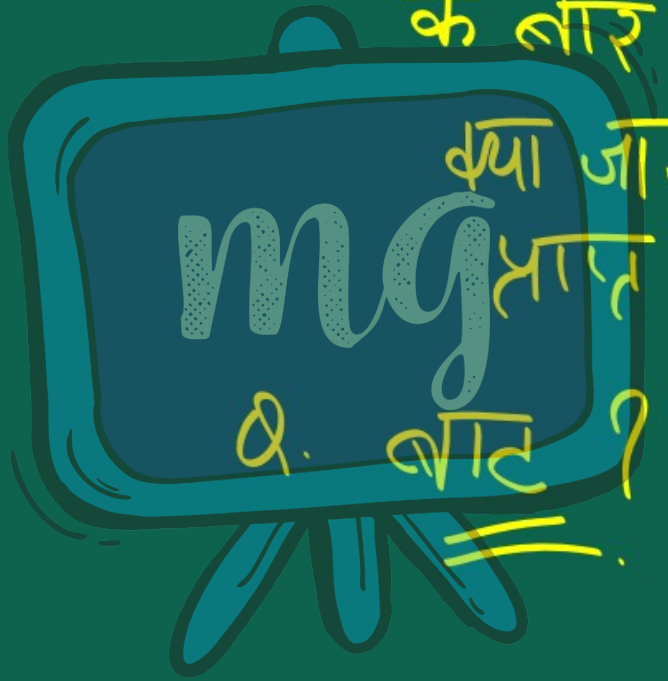

Q. हड़प्पाई लिपि के बारे मे हमें क्या जानकारी प्राप्त होती है?

Q. बाट?